اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(اَلْمُستطرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आखि़र एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

ता़लिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया)।

किताब के ख़रीदार मु-तवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक-त-बतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "अ़क़ीदए आख़िरत"

रईसुत्तह़रीर **अ़ल्लामा अरशदुल क़ादिरी** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का **उर्दू** ज़बान में तह़रीर कर्दा है। मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने इसे तस्हील व तख़्रीज कर के पेश किया है। मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक-त-बतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब देते हुए दर्जे ज़ैल मुआ़-मलात को पेशे नज़र रखने की कोशिश की गई है :

(1) क़रीबुस्सौत (या'नी मिलती जुलती आवाज़ वाले) ह़ुरूफ़ के आपसी इम्तियाज़ (या'नी फ़र्क़) को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के चन्द मख़्सूस ह़ुरूफ़ के नीचे डॉट (.) लगाने का ख़ुसूसी एहतिमाम किया गया है। मा'लूमात के लिये "**ह़ुरूफ़ की पहचान**" नामी चार्ट मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये।

(2) जहां जहां तलफ़्फ़ुज़ के बिगड़ने का अन्देशा था वहां तलफ़्फ़ुज़ की दुरुस्त अदाएगी के लिये जुम्लों में डेश (–) और साकिन ह़र्फ़ के नीचे खोड़ा (्) लगाने का एहतिमाम किया गया है।

(3) उर्दू में लफ़्ज़ के बीच में जहां ع साकिन आता है उस की जगह हिन्दी में सिंगल इन्वर्टेड कोमा (') इस्ति'माल किया गया है। म-सलन دَعوت، اِستِعمال (दा'वत, इस्ति'माल) वग़ैरा।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़-लत़ी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

हुरूफ़ की पहचान

फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ	त = ت
ह़ = ح	छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج
ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ
ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ
ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س	ज़ = ژ
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط
घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ह = ھ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل
ई = اِی / ِی	इ = اِ	ऐ = اے	ए = ے	य = ی

राबिता़ : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409 ´ E-mail :translationmaktabhind@dawateislami.net

पेश लफ़्ज़

अज़ : मुफ़्ती फुज़ैल रज़ा क़ादिरी अ़त्तारी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی

कुरआने करीम में **अल्लाह** سُبْحَانَهٗ وَتَعَالٰی का येह फ़रमान मौजूद है :

فَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ وَ عَزَّرُوْهُ وَ نَصَرُوْهُ وَ اتَّبَعُوا النُّوْرَ الَّذِیْۤ اُنْزِلَ مَعَهٗۤ ۙ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ۠ ﴿۱۵۷﴾ (1)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो वोह जो इस (नबिय्ये मुकर्रम) पर ईमान लाएं और इस की ता'ज़ीम करें और इसे मदद दें और उस नूर (या'नी कुरआन) की पैरवी करें जो इस के साथ उतरा वोही बा मुराद हुए।

इस आयते मुबा-रका की रोशनी में अगर ह़ज़रते अ़ल्लामा फ़ह्हामा अरशदुल क़ादिरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ह़याते त़य्यिबा का जाएज़ा लिया जाए तो इन का ईमान भी कामिल कि नबी की मह़ब्बतो अ़क़ीदत और ता'ज़ीमो तौक़ीर से इन का दिल न सिर्फ़ येह कि ख़ूब सैराब हो चुका था बल्कि उस से छलक्ते इश्क़े रसूल के फ़ैज़ान से एक ज़माना सैराब होता रहा और हो रहा है। नबी की इ़ज़्ज़तो नामूस और नबी के दीन की ख़िदमत व ह़िफ़ाज़त में बसर होने वाले इन की ज़िन्दगी के सफ़ह़ात का एक आ़लम गवाह है ख़ुद भी शरीअ़त के पाबन्द कुरआन के नूर से मुनव्वर दिल और इस्लाम की पाकीज़ा ता'लीमात पर सख़्ती से कारबन्द और दूसरों को पाबन्दी का ज़िन्दगी भर दर्स देते रहना।

अल ग़रज़ मज़्कूरा बाला आयते करीमा की रू से नजात व फ़लाह़ का मदार जिन चार चीज़ों पर है वोह ह़ज़रत की ज़िन्दगी में

1... پ۹، الاعراف: ۱۵۷

कमाल के साथ जम्अ़ दिखाई देती हैं, ख़ुद जाग कर दूसरे को जगाने और ख़ुद काम करने और दूसरों की ज़ेहन साज़ी कर के काम में लगाने वाले अफ़राद की ता'दाद उंग्लियों पर गिनी जा सकती है मगर मोह़सिने मिल्लत अ़ल्लामा अरशदुल क़ादिरी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ की ज़ाते बा ब-रकात ऐसे उ़-लमाए ह़क़ के ज़ुमरे में मुमताज़ मक़ाम पर फ़ाइज़ नज़र आती है इन की ज़िन्दगी भर की फ़िक्री, अ़-मली, तक़रीरी और तह़रीरी सरगर्मियों का जाएज़ा लिया जाए तो तीन मैदान सामने आते हैं :

(الف) दीन के बुन्यादी अ़क़ाइद के तह़फ़्फ़ुज़ व दिफ़ाअ़ और उ़-लमाए सूअ की तख़्रीब कारियों को त़श्त अज़ बाम करना।

(ب) किसी फ़र्द के दिलो दिमाग़ को झन्झोड़ना और उसे ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार कर के दीन पर अ़मल करने और इस के डंके बजाने के लिये तय्यार करना।

(ج) इस्लाम व सुन्नियत के इज्तिमाई मक़ासिद के लिये उ़-लमाए ह़क़ को इत्तिह़ादो इत्तिफ़ाक़ के साथ वसीअ़ पैमाने पर दीने मतीन की ख़िदमत करने के लिये मुख़्तलिफ़ इदारों और तन्ज़ीमों की बुन्यादें रखना।

दीन से दूरी की बिना पर मह़्ज़ माद्दी माह़ोल में परवान चढ़ने वाले जो त़रह़ त़रह़ की ग़लत़ फ़हमियों और फ़िक्री उल्झनों में गिरिफ़्तार दिखाई देते हैं मौजूदा नाज़ुक ह़ालात में उन की ज़ेह्नी सत़्ह़ को मल्ह़ूज़ रखते हुए इस्लाम के बुन्यादी न-ज़रिय्यात और ज़रूरी अह़काम को दिल नशीन तम्हीद व मुदल्लल तशरीह़ के साथ मुसल्मानों के दिलो दिमाग़ में पैवस्त करना ज़रूरी है और सिर्फ़ इतना ही नहीं बल्कि

इस्लाम व सुन्नियत और इस्लामी शख़्सिय्यात पर होने वाले ए'तिराज़ात के जवाबात भी मुदल्लल मगर तासीरी हुस्न के साथ अ़स्री उस्लूब में देना ना गुज़ीर हो चुका है, रईसुत्तह़रीर अ़ल्लामा अरशदुल क़ादिरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को इस लिह़ाज़ से मिसाली मुसन्निफ़ होने का मक़ाम भी ह़ासिल है और इस दा'वे पर किसी क़िस्म की नई दलील की ह़ाजत नहीं बल्कि आप की कुतुबो रसाइल ख़ुद मुसल्लम गवाह की सूरत में मौजूद हैं बस खोल कर पढ़ने की देर है, इन की येह बाक़ियात ख़ुसूसिय्यत के साथ मदारिस के तु-लबा और फ़ारिगुत्तह़सील होने वाले उ़-लमा के लिये बेहतरीन रहनुमा साबित हो सकती हैं।

मौजूदा किताब जो "अ़क़ीदए आख़िरत" की अहम्मिय्यत अ़क़्ल व नक़्ल की रोशनी में उजागर करते हुए लिखी गई है इस में पेचीदा मज़ामीन को किस क़दर दिल नशीन उस्लूब में ख़ूब सहल कर के बयान किया है पढ़ने के बा'द ही इस का एह़सास क़ारी को हो सकता है इस पुर फ़ितन दौर में जब तरक़्क़ी व आज़ादी के नाम पर बद तरीन क़िस्म की बुराइयां मुआ़-शरे में परवान चढ़ रही हैं ह़या व ह़िजाब के सुनहरी मुक़द्दस ज़ेवर के बजाए बे ह़याई और बे ग़ैरती को अपने लिये पसन्द किया जा रहा है ख़ौफ़े ख़ुदा और ख़ौफ़े रोज़े जज़ा का ख़याल तक ज़ेहनों से निकलता जा रहा है मुसल्लमा अह़कामात की खुल्लम खुल्ला ख़िलाफ़ वर्ज़ियां हो रही हैं इस क़िस्म की सूरते ह़ाल में अ़क़ीदए आख़िरत की सच्ची याद दिलाना और दिलो दिमाग़ में इस अ़क़ीदे को रासिख़ करना किस क़दर ज़रूरी हो चुका है हर एक इस की अहम्मिय्यत का अन्दाज़ा बख़ूबी लगा सकता है बस इस अहम किताब

को आप की अपनी आख़िरत की भलाई के लिये कामिल तवज्जोह दरकार है इसी किताब के चन्द अहम मज़ामीन पेशे ख़िदमत हैं :

फ़िक्रे आख़िरत का मुख़्तसर बयान

पहला इक़्तिबास

माद्दियत परस्ती के इस दौर में वाज़ेह तौर पर महसूस कर रहा हूं कि हमारे अफ़्कार व आ'माल पर अब मज़हब की गिरिफ़्त दिन ब दिन ढीली पड़ती जा रही है और इस की वज्ह येह है कि आख़िरत की बाज़पुर्स का ख़तरा अब एक तसव्वुरे मौहूम हो कर रह गया है हालां कि ग़ौर फ़रमाइये तो मज़हब की बुन्याद ही अक़ीदए आख़िरत पर है। अक़ीदए आख़िरत का मतलब येह है कि इस बात का यक़ीन दिल में रासिख़ हो जाए कि हम मरने के बा'द फिर दोबारा ज़िन्दा किये जाएंगे और ख़ुदा के सामने हमें अपनी ज़िन्दगी के सारे आ'माल का हिसाब देना होगा और अपने अ़मल के ए'तिबार से जज़ा व सज़ा दोनों तरह के नताइज का हमें सामना करना पड़ेगा, इसी **यौमुल हिसाब** का नाम मज़्हबे इस्लाम की ज़बान में क़ियामत है।

अगर आख़िरत का येह ए'तिक़ाद दिलों से निकल जाए तो मज़हब की पाबन्दी का सुवाल ही बे मा'ना हो कर रह जाए, आख़िर कोई आदमी क्यूं र-मज़ान के महीने में सारा दिन अपने आप को भूका प्यासा रखे, ठिठरती हुई सर्दी में क्यूं कोई अपने गर्म लिहाफ़ से निकल कर मस्जिद की तरफ़ जाए, अपने ख़ून पसीने से कमाई हुई दौलत क्यूं कोई ज़कात के नाम पर ग़रीबों में लुटाए, ख़्वाहिशे नफ़्स और क़ुदरत

व इख़्तियार के बा वुजूद क्यूं कोई ऐसी बहुत सारी चीज़ों से मुंह मोड़े जिसे मज़हब ने मम्नूअ़ क़रार दिया है ? येह सारी मशक़्क़तें और तक्लीफ़ें सिर्फ़ इसी लिये तो गवारा कर ली जाती हैं कि इन के पीछे या तो अ़ज़ाब का ख़तरा लाहिक़ है या फिर दाइमी आसाइशो राहत का तसव्वुर मज़हब की हिदायात पर चलने की तरग़ीब देता है।

अ़क़ीदए आख़िरत के येह दो मुहर्रिकात हैं जो दिल के इरादों पर हुकूमत करते हैं दूसरे लफ़्ज़ों में इसी अ़क़ीदे का नाम "**ईमान बिलग़ैब**" है या'नी अपनी आंख से देखे और अपने कान से सुने बिग़ैर उन हक़ाइक़ का अपने मुशा–हदे से भी बढ़ कर यक़ीन किया जाए जिन की ख़बर रसूले आ'ज़म صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़रीए हम तक पहुंची है।

दूसरा इक़्तिबास

इस आ़लमे हस्ती में इन्सान की आमद पर आप ग़ौर करेंगे तो आप पर येह राज़ खुलेगा कि इन्सान अचानक यहां नहीं आ गया बल्कि इस आ़लम में क़दम रखने से पहले कई आ़लम से वोह गुज़र चुका था, पहला आ़लम "आ़लमे अरवाह़" है जहां इस की रूह़ मौजूद थी और इस का सुबूत येह है कि इस्तिक़रारे ह़म्ल के कुछ अ़र्से बा'द जब बच्चे के जिस्म में रूह़ दाख़िल होती है और वोह मां के पेट में ह़–र–कत करने लगता है तो अब सुवाल येह पैदा होता है कि बच्चे के जिस्म में दाख़िल होने से पहले वोह रूह़ कहां थी या कहां से आई ? वोह जहां भी मौजूद हो या जहां से भी आई हो उसी आ़लम का नाम आ़लमे अरवाह़ है।

अब आ़लमे अरवाह़ के बा'द दूसरा आ़लम है "शि–कमे मादर" जिसे आ़लमे अरह़ाम भी कहा जाता है, इस आ़लम में भी इन्सान को कमो बेश नव महीने रहना पड़ता है, एक मिनट रुक कर ज़रा कुदरत का येह ह़ैरत अंगेज़ इन्तिज़ाम देखिये कि एक चलती फिरती क़ब्र में नव महीने तक एक बच्चा ज़िन्दा रहता है, इस के मा'ना येह हैं कि इन्सानी ज़िन्दगी के लिये जितने अस्बाब की ज़रूरत है वोह सारे अस्बाब बच्चे को वहां फ़राहम किये जाते हैं।

शि–कमे मादर से बाहर आ जाने के बा'द अगर सारी दुन्या के अति़ब्बा व हु–कमा चाहें कि पेट चाक कर के फिर बच्चे को दोबारा उस जगह मुन्तक़िल कर दें तो यक़ीन है कि एक मिनट भी वहां ज़िन्दा नहीं रह सकेगा, यहीं से ख़ुदा और बन्दों के इन्तिज़ाम का फ़र्क़ समझ में आ जाता है कि जो चीज़ बन्दों के लिये ना मुम्किन है वोह ख़ुदा की कुदरत के सामने मुम्किन ही नहीं बल्कि वाक़ेअ़ है और येह बात भी वाज़ेह़ हो जाती है कि हर आ़लम का माह़ोल और तक़ाज़ा अलग अलग है, एक का क़ियास दूसरे पर नहीं किया जा सकता।

इतनी तफ़्सील के बा'द कहना येह है कि आ़लमे दुन्या में आने से पहले अगर इन्सान को मर्ह़ला वार दो आ़लम से गुज़रना पड़ता है तो आ़लमे दुन्या के बा'द भी अगर कोई चौथा आ़लम मान लिया जाए तो इस में क्या अ़क़्ली क़बाह़त है ? इसी चौथे आ़लम का नाम हम आ़लमे आख़िरत रखते हैं अगर इसी नाम से इख़्तिलाफ़ है तो कोई और नाम रख लिया जाए लेकिन एक चौथा आ़लम तो बहर ह़ाल मानना ही पड़ेगा, क्यूं कि मरने के बा'द जब रूह़ जिस्म से निकल जाती है तो

वोही सुवाल यहां भी उठेगा कि निकल कर वोह कहां गई ? वोह जहां भी गई हो उसी का नाम आ़लमे आख़िरत है।

तीसरा इक़्तिबास

तौह़ीद के बा'द दूसरी सिफ़त जो हर ज़माने में तमाम अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام पर मुन्कशिफ़ की गई और जिस की ता'लीम देने पर वोह मामूर किये गए वोह आख़िरत पर यक़ीन रखना था, क्यूं कि दीन का पहला बुन्यादी उसूल येह है कि हमारा रब सिर्फ़ **अल्लाह** है जिस की इबादत की जानी चाहिये और दूसरा बुन्यादी उसूल आख़िरत पर यक़ीन रखना है जिसे सू-रतुल ब-क़रह 2 की पहली ही आयत में अ़लत्तरतीब इस त़रह़ फ़रमाया गया है कि

(1) اَلَّذِیْنَ یُؤْمِنُوْنَ بِالْغَیْبِ (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** वोह जो बे देखे ईमान लाएं) और (2) وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ یُوْقِنُوْنَ (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और आख़िरत पर यक़ीन रखें) और ऐसे ही लोगों को इन ही आयात में मुत्तक़ीन (डर वाले) के लक़ब से नवाज़ा गया है और बुलन्द मर्तबा किताब (क़ुरआन) ऐसे ही डर वालों की हिदायत के लिये नाज़िल फ़रमाई गई है।

चौथा इक़्तिबास

कुफ़्र बिल्लाह मह़ज़ हस्तिये बारी के इन्कार का नाम ही नहीं है बल्कि तकब्बुर और फ़ख़्रो ग़ुरूर और इन्कारे आख़िरत भी **अल्लाह** से कुफ़्र ही है, जिस ने येह समझा कि मेरी दौलत और शानो शौकत

1...پ۱، البقرۃ:۳ 2...پ۱، البقرۃ:۴

किसी का अ़तिय्या नहीं बल्कि मेरी कुव्वत व क़ाबिलिय्यत का नतीजा है और मेरी दौलत ला ज़वाल है कोई इस को मुझ से छीनने वाला नहीं और किसी के सामने मुझे ह़िसाब देना नहीं वोह अगर ख़ुदा को मानता भी है तो मह़ज़ एक वुजूद की ह़ैसिय्यत से मानता है अपने मालिक और आक़ा और फ़रमां रवा की ह़ैसिय्यत से नहीं मानता ह़ालां कि **ईमान बिल्लाह** इसी ह़ैसिय्यत से ख़ुदा मानना है न कि मह़ज़ एक मौजूद हस्ती की ह़ैसिय्यत से।

पांचवां इक़्तिबास

आख़िरत के इन्कार के बा'द ख़ुदा को मानना दीने इस्लाम में कोई मा'नी नहीं रखता क्यूं कि आख़िरत को मुस्तब्अ़द समझना सिर्फ़ आख़िरत ही का इन्कार नहीं बल्कि ख़ुदा की क़ुदरत और ह़िक्मत का भी इन्कार है, कमज़र्फ़ लोग जिन्हें दुन्या में कुछ शानो शौकत ह़ासिल हो जाती है हमेशा इस ग़लत़ फ़हमी में मुब्तला रहते हैं कि उन्हें इसी दुन्या में जन्नत नसीब हो चुकी है और अब वोह कौन सी जन्नत है जिसे ह़ासिल करने की वोह फ़िक्र करें ?

छटा इक़्तिबास

इन्कारे आख़िरत वोह चीज़ है जो किसी शख़्स, गुरौह या क़ौम को मुजरिम बनाए बिग़ैर नहीं रहती, अख़्लाक़ की ख़राबी इस का लाज़िमी नतीजा है और तारीख़े इन्सानी शाहिद है कि ज़िन्दगी के इस न–ज़रिय्ये को जिस क़ौम ने इख़्तियार किया है वोह आख़िर कार तबाह हो कर रही, आख़िरत से इन्कार दर अस्ल ख़ुदा और उस की क़ुदरत और ह़िक्मत से इन्कार है और आख़िरत से इन्कार वोही लोग करते हैं

जो ख़्वाहिशाते नफ़्स की बन्दगी करना चाहते हैं और अ़क़ीदए आख़िरत को अपनी इस आज़ादी में मानेअ़ समझते हैं जब वोह आख़िरत का इन्कार कर देते हैं तो उन की बन्दगिये नफ़्स और ज़ियादा बढ़ती चली जाती है और वोह अपनी गुमराही में रोज़ ब रोज़ ज़ियादा ही भटक्ते चले जाते हैं।

सातवां इक़्तिबास

आ़लमे आख़िरत का तसव्वुर सिर्फ़ अहले इस्लाम ही के अ़क़ीदे में नहीं है बल्कि दुन्या के सारे इन्सानों की फ़ित़रत इसी अ़क़ीदे से हम–आहंग है।

चन्द मख़्सूस त़बक़ात और चन्द मख़्सूस अ़ह्द के लोगों के बारे में कहा जा सकता है कि वोह फ़िक्रो ए'तिक़ाद की ग़–लत़ियों में मुब्तला हो गए लेकिन नस्ले इन्सानी के यौमे आग़ाज़ से ले कर आज तक बिला तफ़रीक़ सारी दुन्या के इन्सानों पर येह इल्ज़ाम हरगिज़ आ़इद नहीं किया जा सकता कि आख़िरत के तसव्वुर को अपने मज़्हबी अ़क़ाइद की फ़ेहरिस्त में शामिल कर के वोह फ़रेबे मुसल्सल का शिकार रहे ख़ास त़ौर पर इन ह़ालात में जब कि अ़क़ीदए आख़िरत की ता'लीम देने वालों में वोह अम्बियाओ मुर–सलीन (عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) भी हैं जिन की शख़्सिय्यतें न सिर्फ़ अहले इस्लाम में बल्कि अक़्वामे आ़लम में भी मुसल्लमुस्सुबूत और इ़ज़्ज़तो शरफ़ की ह़ामिल हैं और वोह लोग भी हैं जो अपने अपने ह़ल्क़े में मज़्हबी और रूह़ानी पेश्वा की हैसिय्यत से जाने और माने जाते हैं इस लिये कहने दिया जाए कि अगर तारीख़ के हर दौर के सारे इन्सानों को हम झूटा क़रार दे दें तो

फिर इस दुन्या में कौन सच्चा रह जाएगा ?...... अ़क़ीदए आख़िरत की तक्ज़ीब करने वाला सिर्फ़ किसी एक त़बके़ की तक्ज़ीब नहीं करता बल्कि इब्तिदा से ले कर आज तक हर अ़ह्द के सारे इन्सानों को वोह झूटा साबित करना चाहता है।

येह तो चन्द झल्कियां थी अब किताब की वरक़ गर्दानी करते हुए मोह़सिने मिल्लत की ईमान अफ़्रोज़ तह़रीर से इस्तिफ़ादा कीजिये, **नीज़ याद रहे कि इस किताब पर मजलिसे "अल मदीनतुल इल्मिय्या" की त़रफ़ से मुन्दरिजए ज़ैल काम किये गए हैं :**

● अक्सर मक़ामात पर आयात के तरजमों पर इक्तिफ़ा था तो उन की आयात भी ज़िक्र कर दी गईं और अस्ल किताब से जुदा करने के लिये उन्हें ब्रेकेट में कर दिया गया है।

● जहां आयात का तरजमा नहीं किया गया था वहां "कन्ज़ुल ईमान" से ब्रेकेट में उन का तरजमा कर दिया गया है।

● अस्ल किताब में आयात का ह़वाला जिस त़रह़ दिया गया था उसे उसी त़रह़ बर क़रार रखते हुए क़ारी की मज़ीद आसानी के लिये ह़ाशिये में सूरत के नाम, पारह नम्बर और आयत नम्बर के साथ तख़्रीज कर दी गई है और जहां अस्ल किताब में आयत की तख़्रीज नहीं की गई थी उस की तख़्रीज का भी ह़ाशिया में एहतिमाम कर दिया गया है।

● जिन आयात के ह़वाले या तरजमे में किताबत की ग़-लत़ी लगी उन मक़ामात का क़ुरआने पाक और कन्ज़ुल ईमान से तक़ाबुल कर के मत्न में उन की तस्ह़ीह़ करते हुए ह़ाशिये में वज़ाह़त कर दी गई है।

● मज़्मून की मुना-सबत से नई हेडिंग्ज़ का इज़ाफ़ा और ब्रेकेट के ज़रीए मुसन्निफ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की हेडिंग्ज़ से उन्हें मुमताज़ कर दिया गया है।

● जहां तख़्रीज की ज़रूरत थी वहां तख़्रीज भी कर दी गई है।

● मुश्किल अल्फ़ाज़ पर ए'राब और हाशिये में उन के मा'ना का भी एहतिमाम किया गया है।

● आख़िर में मआख़िज़ो मराजेअ़ व फ़ेहरिस्त का भी इज़ाफ़ा कर दिया गया है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ है कि वोह इस कोशिश को क़बूल फ़रमाए और हमारे हर अ़मल को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमाए और इस को अ़वामो ख़वास के लिये नफ़्अ़ बख़्श बनाए !

آمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَاَصْحَابِہٖ وَبَارَکَ وَسَلَّم

अबुल ह़सन फ़ुज़ैल रज़ा अल क़ादिरी अल अ़त्तारी عَفَاعَنْهُ الْبَارِی

आ़लमे बरज़ख़

दुन्या और आख़िरत के दरमियान एक और आ़लम है जिस को बरज़ख़ कहते हैं, मरने के बा'द और क़ियामत से पहले तमाम इन्सो जिन्न को ह़स्बे मरातिब उस में रहना होता है और येह आ़लम इस दुन्या से बहुत बड़ा है। दुन्या के साथ बरज़ख़ को वोही निस्बत है जो मां के पेट के साथ दुन्या को, बरज़ख़ में किसी को आराम है और किसी को तक्लीफ़। (**बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 98**)

अ़क़ीदए आख़िरत

तौह़ीद के बा'द दूसरी सिफ़त जो हर ज़माने में तमाम अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام पर मुन्कशिफ़[1] की गई और जिस की ता'लीम देने पर वोह मामूर किये गए वोह आख़िरत पर यक़ीन रखना था, क्यूं कि दीन का **पहला बुन्यादी उसूल** येह है कि हमारा रब सिर्फ़ **अल्लाह** है जिस की इ़बादत की जानी चाहिये और **दूसरा बुन्यादी उसूल** आख़िरत पर यक़ीन रखना है जिसे सू-रतुल ब-क़रह 2 की पहली ही आयत में अ़लत्तरतीब[2] इस त़रह़ फ़रमाया गया है कि

اَلَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ[3] (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** वोह जो बे देखे ईमान लाएं) और وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ[4] (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और आख़िरत पर यक़ीन रखें) और ऐसे ही लोगों को इन ही आयात में मुत्तक़ीन (डर वाले) के लक़ब से नवाज़ा गया है और बुलन्द मर्तबा किताब (क़ुरआन) ऐसे ही डर वालों की हिदायत के लिये नाज़िल फ़रमाई गई है।

(इन्तिख़ाबे अम्बिया की अहम वज्ह :)

ख़ुदाए तआ़ला ने अपने बरगुज़ीदा नबियों को अगर कलिमए ह़क़ बुलन्द करने के लिये मुन्तख़ब किया तो मुन्तख़ब किये जाने की वज्ह सिर्फ़ येह न थी कि वोह اُولِى الْاَيْدِىْ وَالْاَبْصَارِ (क़ुदरत और इ़ल्म वाले) थे बल्कि जैसा ख़ुद ख़ुदाए तआ़ला सूरए ص 38 के रुकूअ़ 4 में

1...... आशकार।
2...... तरतीब के साथ।
3...پ١، البقرة: ٣۔
4...پ١، البقرة: ٤۔

फ़रमाता है कि इन चीदा बन्दों को मुन्तख़ब किये जाने की वज्ह उन की येह ख़ालिस सिफ़त थी कि वोह दारे आख़िरत को याद रखते थे और दूसरों को भी याद दिलाते थे ।

इर्शाद है :

﴿وَاذْكُرْ عِبٰدَنَآ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ اُولِي الْاَيْدِيْ وَالْاَبْصَارِ ۝۴۵ اِنَّآ اَخْلَصْنٰهُمْ بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى الدَّارِ ۝۴۶﴾[1]

और याद करो हमारे बन्दों इब्राहीम और इस्हाक़ और या'क़ूब क़ुदरत और इ़ल्म वालों को बेशक हम ने उन्हें एक खरी बात से इम्तियाज़ बख़्शा कि वोह उस घर की याद है ।

(फ़लाह़ व नजात का मुजर्रब नुस्ख़ा :)

जब कोई **अल्लाह** और उस की क़ुदरत और ह़िक्मत पर ईमान ले आता है तो वोह ऐसा सहारा थाम लेता है जो कभी टूटने वाला नहीं और वोह नतीजतन[2] फ़लाह़ का ह़क़दार बन कर उस चीज़ को पा लेता है जिस का उस से वा'दा किया जाता रहा है या'नी आख़िरत की काम्याबी । दीन में अ़क़ीदए आख़िरत की इसी अहम्मिय्यत के पेशे नज़र फ़रमाया गया है :

﴿هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَّ خَيْرٌ عُقْبًا﴾[3]

उस (**अल्लाह**) का सवाब सब से बेहतर और उसे मानने का अन्जाम भला । (سورۃ الکہف ۱۸، رکوع ۵)

1...... پ۲۳،صٓ:۴۵-۴۶

2...... इस के बदले में ।

3...... پ۱۵،الکہف:۴۴

दीने इस्लाम में अ़क़ीदए आख़िरत की इसी अहम्मिय्यत की वज्ह से रोज़े जज़ा को बरह़क़ मानना एक मोमिन की सिफ़ात में दीगर सिफ़ात के साथ लाज़िमी सी चीज़ क़रार दी गई है चुनान्चे एक मौक़ए़ पर इन की इस सिफ़त को इस त़रह़ फ़रमाया गया है :

(وَالَّذِيْنَ يُصَدِّقُوْنَ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ﴿٢٦﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ ﴿٢٧﴾)(1)

और वोह जो इन्साफ़ का दिन सच जानते हैं और वोह जो अपने रब के अ़ज़ाब से डरते हैं। (سورۃ المعارج ۷۰، رکوع ۱)

(इन्कारे आख़िरत के बा'द ख़ुदा को मानना बे मा'ना है :)

आख़िरत के इन्कार के बा'द ख़ुदा को मानना दीने इस्लाम में कोई मा'नी नहीं रखता क्यूं कि आख़िरत को मुस्तब्अ़द(2) समझना सिर्फ़ आख़िरत ही का इन्कार नहीं बल्कि ख़ुदा की क़ुदरत और ह़िक्मत का भी इन्कार है, कमज़र्फ़ लोग जिन्हें दुन्या में कुछ शानो शौकत ह़ासिल हो जाती है हमेशा इस ग़लत़ फ़हमी में मुब्तला रहते हैं कि उन्हें इसी दुन्या में जन्नत नसीब हो चुकी है और अब वोह कौन सी जन्नत है जिसे ह़ासिल करने की वोह फ़िक्र करें ?

(मुन्किरे आख़िरत की मिसाल और इस का अन्जाम :)

ऐसी ही मिसाल ख़ुदाए तआ़ला ने सू-रतुल कह्फ़ 18 के रुकूअ़ 5 में दो मर्दों की दी है जिन में एक को उस ने अंगूरों के दो बाग़

1...... پ۲۹، المعارج: ۲۶-۲۷

2...... बईद, ना मुम्किन।

दिये थे जो खजूरों से ढांप दिये गए थे और उन के बीच बीच में खेती रखी गई थी दोनों बाग़ों के बीच में ख़ुदा ने नहर भी बहा दी थी और वोह फल भी ख़ूब देते थे, एक रोज़ येह शख़्स अपने साथी से बोला कि

اَنَا اَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَّ اَعَزُّ نَفَرًا ﴿۳۴﴾
وَ دَخَلَ جَنَّتَهٗ وَ هُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ
قَالَ مَاۤ اَظُنُّ اَنْ تَبِيْدَ هٰذِهٖۤ اَبَدًا ﴿۳۵﴾
وَّ مَاۤ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ وَّ لَئِنْ
رُّدِدْتُّ اِلٰى رَبِّيْ لَاَجِدَنَّ خَيْرًا مِّنْهَا
مُنْقَلَبًا ﴿۳۶﴾ قَالَ لَهٗ صَاحِبُهٗ وَ هُوَ
يُحَاوِرُهٗۤ اَكَفَرْتَ بِالَّذِيْ خَلَقَكَ
مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ سَوّٰىكَ
رَجُلًا ﴿۳۷﴾ لٰكِنَّا۠ هُوَ اللّٰهُ رَبِّيْ وَ لَاۤ
اُشْرِكُ بِرَبِّيْۤ اَحَدًا ﴿۳۸﴾ وَ لَوْ لَاۤ اِذْ
دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَآءَ اللّٰهُ ۙ
لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ۚ اِنْ تَرَنِ اَنَا
اَقَلَّ مِنْكَ مَالًا وَّ وَلَدًا ﴿۳۹﴾ ۚ فَعَسٰى
رَبِّيْۤ اَنْ يُّؤْتِيَنِ خَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَ

मैं तुझ से माल में ज़ियादा हूं और आदमियों का ज़ियादा ज़ोर रखता हूं, अपने बाग़ (जन्नत) में गया और अपनी जान पर ज़ुल्म करता हुवा बोला : मुझे गुमान नहीं कि येह कभी फ़ना हो और मैं गुमान नहीं करता कि क़ियामत क़ाइम हो और अगर मैं अपने रब की त़रफ़ फिर गया भी तो ज़रूर इस बाग़ से बेहतर पलटने की जगह पाऊंगा उस के साथी ने उस से उलट फैर[1] करते हुए जवाब दिया : क्या तू उस के साथ कुफ़्र करता है जिस ने तुझे मिट्टी से बनाया फिर निथरे पानी की बूंद से फिर तुझे ठीक मर्द किया लेकिन मैं तो येही कहता हूं कि वोह **अल्लाह** ही मेरा रब है और मैं किसी को अपने रब का शरीक नहीं करता हूं और क्यूं न हुवा कि जब तू अपने बाग़ में (जिन

1...... या'नी बहस।

يُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَآءِ فَتُصْبِحَ صَعِيْدًا زَلَقًا ﴿۴۰﴾ اَوْ يُصْبِحَ مَآؤُهَا غَوْرًا فَلَنْ تَسْتَطِيْعَ لَهٗ طَلَبًا ﴿۴۱﴾)(2)

तक) गया तो कहा होता जो चाहे[1] **अल्लाह** हमें कुछ ज़ोर नहीं मगर **अल्लाह** की मदद का अगर तू मुझे अपने से माल व औलाद में कम देखता तो क़रीब है कि मेरा रब मुझे तेरे बाग़ से अच्छा दे और तेरे बाग़ पर आस्मान से बिज्लियां उतारे तो वोह पट पर[3] मैदान हो कर रह जाए या उस का पानी ज़मीन में धंस जाए फिर तू उसे हरगिज़ तलाश न कर सके।

ख़ुदा ने उसे इस कुफ़्र का बदला येह दिया कि

وَاُحِيْطَ بِثَمَرِهٖ فَاَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلٰى مَآ اَنْفَقَ فِيْهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا وَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ لَمْ اُشْرِكْ

और उस के फल घेर लिये गए तो अपने हाथ मलता रह गया उस लागत पर जो उस बाग़ में ख़र्च की थी और वोह अपने टट्टियों[4] पर गिरा हुवा था और कह रहा है : ऐ काश ! मैं ने अपने

1...... अस्ल में इबारत इस तरह थी : “(**जिन तक) गया होता तो क्या होता जो चाहिये** ” जिसे कन्ज़ुल ईमान से तक़ाबुल कर के दुरुस्त कर दी गई।

2...... پ۱۵،الكهف:۳۹-۴۱

3...... या’नी चटियल।

4...... या’नी छपरों।

नोट : अस्ल में लफ़्ज़ “टेटों” लिखा था जिसे कन्ज़ुल ईमान से तक़ाबुल कर के दुरुस्त कर दिया गया।

بِرَبِّیۡۤ اَحَدًا ﴿۴۲﴾ وَ لَمۡ تَکُنۡ لَّہٗ فِئَۃٌ یَّنۡصُرُوۡنَہٗ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰہِ وَ مَا کَانَ مُنۡتَصِرًا ﴿ؕ۴۳﴾ ہُنَالِکَ الۡوَلَایَۃُ لِلّٰہِ الۡحَقِّ ؕ ہُوَ خَیۡرٌ ثَوَابًا وَّ خَیۡرٌ عُقۡبًا ﴿۴۴﴾ (1)

रब का किसी को शरीक न किया होता और उस के पास कोई जमाअ़त न थी कि **अल्लाह** के सामने उस की मदद करती न वोह बदला लेने के क़ाबिल था यहां खुलता है कि इख़्तियार सच्चे **अल्लाह** का है उस का सवाब सब से बेहतर और उसे मानने का अन्जाम सब से भला।

उस शख़्स के येह कहने से कि وَلَئِنۡ رُّدِدۡتُّ اِلٰی رَبِّیۡ ज़ाहिर है कि वोह ख़ुदा के वुजूद का क़ाइल था मगर आख़िरत का क़ाइल न था, इस लिये उस के साथी ने उसे **कुफ़्र बिल्लाह** का मुजरिम क़रार दिया। इन सारी आयात और मुका-लमे से दीन में अ़क़ीदए आख़िरत की अहम्मिय्यत का येह नुक्ता सामने आता है कि **कुफ़्र बिल्लाह** महूज़ हस्तिये बारी के इन्कार का नाम ही नहीं है बल्कि तकब्बुर और फ़ख़्रो गुरूर और इन्कारे आख़िरत भी **अल्लाह** से कुफ़्र ही है, जिस ने येह समझा कि मेरी दौलत और शानो शौकत किसी का अ़तिय्या नहीं बल्कि मेरी कुव्वत व क़ाबिलिय्यत का नतीजा है और मेरी दौलत ला ज़वाल है कोई इस को मुझ से छीनने वाला नहीं और किसी के सामने मुझे ह़िसाब देना नहीं वोह अगर ख़ुदा को मानता भी है तो महूज़ एक वुजूद की ह़ैसिय्यत से मानता है अपने मालिक और आक़ा और फ़रमां रवा की ह़ैसिय्यत से नहीं मानता ह़ालां कि **ईमान बिल्लाह** इसी ह़ैसिय्यत से ख़ुदा मानना है न कि महूज़ एक मौजूद हस्ती की ह़ैसिय्यत से।

1...... پ۱۵،الکہف:۴۲-۴۴

(वुक़ूए़ क़ियामत अ़क़्ल व इन्साफ़ का तक़ाज़ा है :)

क़ियामत का वुक़ूअ़ अ़क़्ल और इन्साफ़ का तक़ाज़ा है क्यूं कि जब ख़ुदा ने इन्सान को अ़क़्ल व तमीज़ और तसर्रुफ़ के इख़्तियारात दे रखे हैं तो ज़ाहिर है कि वोह उस के आ'माल व अफ़्आ़ल से भी बा ख़बर रहेगा और येह देखेगा कि उस की ज़मीन में इस ने इन इख़्तियारात को कैसे इस्ति'माल किया ? क़ियामत बरपा किये बिग़ैर ख़ुदा की ह़िक्मत के तक़ाज़े पूरे नहीं हो सकते और एक ह़कीम से बईद है कि वोह इन तक़ाज़ों को पूरा न करे इसी लिये फ़रमाया कि

(لِيَجْزِىَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ۝۴)(1)

(येह क़ियामत इस लिये बरपा की जाएगी कि) ताकि सिला दे (**अल्लाह**) उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किये येह हैं जिन के लिये बख़्शिश है और इ़ज़्ज़त की रोज़ी । (سورۃ السبا۳۴،ر۱ کوع۱)

(वुक़ूए़ क़ियामत अख़्लाक़ का भी तक़ाज़ा है :)

क़ियामत बरपा किया जाना सिर्फ़ अ़क़्ल ही का तक़ाज़ा नहीं बल्कि अख़्लाक़ का तक़ाज़ा भी है। हर ज़माने में इन्सान के मुख़्तलिफ़ त़रीक़ों में इस मुआ़-मले में इख़्तिलाफ़ात रहे हैं और हर एक ने अपने न-ज़रिय्ये के मुत़ाबिक़ एक अख़्लाक़ी फ़ल्सफ़ा और एक अख़्लाक़ी रवय्या इख़्तियार किया है आख़िर कोई वक़्त तो होना चाहिये जब कि इन सब का अख़्लाक़ी नतीजा सिला या सज़ा की शक्ल में ज़ाहिर हो, इस दुन्या का निज़ाम अगर सह़ीह़ और मुकम्मल अख़्लाक़ी नताइज के

1...... پ۲۲،سبا:۴

ज़ुहूर का मु-तहम्मिल[1] नहीं है तो एक दूसरी दुन्या होनी चाहिये जहां येह नताइज ज़ाहिर हो सकें।

(मुन्किरीन के त़न्ज़ व तमस्ख़ुर के क़ुरआनी जवाबात :)

जब मुन्किरीन और काफ़िरीन इ़ल्म ह़ासिल करने के लिये नहीं बल्कि त़न्ज़ और तमस्ख़ुर के त़ौर पर लोगों से कहा करते थे कि जिस क़ियामत के आने की येह पैग़म्बर (**रसूलुल्लाह**) ख़बर दे रहे हैं वोह तो आती ही नहीं तो ख़ुदा ने **रसूलुल्लाह** से कहा कि

(قُلْ بَلٰى وَرَبِّیْ لَتَاْتِیَنَّكُمْ ۙ عٰلِمِ الْغَیْبِ ۚ لَا یَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِی السَّمٰوٰتِ وَلَا فِی الْاَرْضِ وَلَاۤ اَصْغَرُ مِنْ ذٰلِكَ وَلَاۤ اَكْبَرُ اِلَّا فِیْ كِتٰبٍ مُّبِیْنٍ ۙ۝۳)[2]

तुम फ़रमाओ क्यूं नहीं मेरे रब की क़सम बेशक ज़रूर तुम पर आएगी, ग़ैब जानने वाला (आ़लिमुल ग़ैब) उस से ग़ाइब नहीं ज़र्रा भर कोई चीज़ आस्मानों में और ज़मीन में और न उस से छोटी और न बड़ी मगर एक साफ़ बताने वाली किताब में है। (سورۃ السبا۳۴، رکوع۱)

परवर दगार की क़सम खाते हुए उस के लिये आ़लिमुल ग़ैब की सिफ़त इस्ति'माल करने से ख़ुद बख़ुद इस अम्र की त़रफ़ इशारा है कि क़ियामत का आना तो यक़ीनी है मगर उस के आने का वक़्त आ़लिमुल ग़ैब के सिवा किसी को मा'लूम नहीं क़ियामत के ह़क़ीक़ी होने को ख़ुदा ने निहायत ह़कीमाना त़रीक़े से येह कह कर कि जिस त़रह़ आज के बा'द कल का आना लाबुदी[3] है इसी त़रह़ आख़िरत का भी वुक़ूअ़ पज़ीर होना लाज़िमी है और इसी लिये ख़ुदा ने इस रोज़े

1...... अह्ल

2...... پ۲۲،سبا:۳

3...... यक़ीनी

आख़िरत के लिये इन्सान को तय्यारी करने की हिदायत फ़रमाई है :

(يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۸﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ نَسُوا اللّٰهَ فَاَنْسٰىهُمْ اَنْفُسَهُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۱۹﴾ لَا يَسْتَوِيْٓ اَصْحٰبُ النَّارِ وَاَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ؕ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿۲۰﴾)[1]

ऐ ईमान वालो ! **अल्लाह** से डरो और हर जान देखे कि कल के लिये क्या आगे भेजा और **अल्लाह** से डरो बेशक **अल्लाह** को तुम्हारे कामों की ख़बर है और उन जैसे न हो जो **अल्लाह** को भूल बैठे तो **अल्लाह** ने उन्हें बला में डाला कि अपनी जानें याद न रहीं वोही फ़ासिक़ हैं, दोज़ख़ वाले और जन्नत वाले बराबर नहीं,[2] जन्नत वाले ही मुराद को पहुंचे। (سورۃ الحشر۵۹، رکوع۳)

(اِنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ اَكَادُ اُخْفِيْهَا لِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا تَسْعٰى ﴿۱۵﴾ فَلَا يَصُدَّنَّكَ عَنْهَا مَنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ فَتَرْدٰى ﴿۱۶﴾)[3]

बेशक क़ियामत आने वाली है क़रीब था कि मैं उसे सब से छुपाऊं कि हर जान अपनी कोशिश[4] का बदला पाए तो हरगिज़ तुझे उस के मानने से वोह बाज़ न रखे जो उस पर ईमान नहीं लाता और अपनी ख़्वाहिश के पीछे चला फिर तो हलाक हो जाए। (سورۃ طٰہٰ۲۰، رکوع۱)

1...... پ۲۸، الحشر: ۱۸–۲۰

2...... अस्ल में यहां लफ़्ज़ "हैं" था जिसे कन्ज़ुल ईमान से तक़ाबुल कर के दुरुस्त कर दिया गया।

3...... پ۱۶، طٰہٰ: ۱۵–۱۶

4...... अस्ल में यहां कुछ तरजमा किताबत से रह गया था जिसे कन्ज़ुल ईमान से पूरा कर दिया गया है।

وَ اَنَّهٗ يُحۡىِ الۡمَوۡتٰى وَ اَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ۙ‏ ﴿۶﴾ وَّاَنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ لَّا رَيۡبَ فِيۡهَا ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ يَبۡعَثُ مَنۡ فِى الۡقُبُوۡرِ ﴿۷﴾ (1)

और येह कि वोह मुर्दे जिलाएगा और येह कि वोह सब कुछ कर सकता है और इस लिये कि क़ियामत आने वाली इस में कुछ शक नहीं और येह कि **अल्लाह** उठाएगा उन्हें जो क़ब्रों में हैं।

(سورۃ الحج ۲۲، رکوع ۱)

जहां तक दोबारा ज़िन्दा किये जाने का सुवाल है मुन्किरीन इस का मज़ाक़ क़िस्सए पारीना[2] कह कर उड़ाते थे, इस लिये ख़ुदाए तआ़ला ने फ़रमाया :

قَالُوۡا مِثۡلَ مَا قَالَ الۡاَوَّلُوۡنَ ﴿۸۱﴾ قَالُوۡۤا ءَاِذَا مِتۡنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبۡعُوۡثُوۡنَ ﴿۸۲﴾ لَقَدۡ وُعِدۡنَا نَحۡنُ وَاٰبَآؤُنَا هٰذَا مِنۡ قَبۡلُ اِنۡ هٰذَاۤ اِلَّاۤ اَسَاطِيۡرُ الۡاَوَّلِيۡنَ ﴿۸۳﴾ (3)

उन्हों ने वोही कही जो अगले कहते थे, बोले : क्या जब हम मर जाएं और मिट्टी और हड्डियां हो जाएं क्या फिर निकाले जाएंगे बेशक येह वा'दा हम को और हम से पहले बाप दादा को दिया गया, येह तो नहीं मगर वोही अगली दास्तानें। (سورۃ المؤمنون ۲۳، رکوع ۵)

ख़ुदाए तआ़ला ने दोबारा ज़िन्दा किये जाने की वज्ह भी उन्हें बताई जिस का बराहे रास्त तअ़ल्लुक़ अ़क़ीदए आख़िरत पर यक़ीन रखने से है, फ़रमाया :

1...... پ۱۷، الحج: ۶-۷

2...... पुरानी कहानी।

3...... پ۱۸، المؤمنون: ۸۱-۸۳

(ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝ اِلَیْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِیْعًا ؕ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ؕ اِنَّهٗ یَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ یُعِیْدُهٗ لِیَجْزِیَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ بِالْقِسْطِ ؕ وَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِیْمٍ وَّ عَذَابٌ اَلِیْمٌۢ بِمَا كَانُوْا یَكْفُرُوْنَ ۝)[1]

येह है तुम्हारा **अल्लाह** तुम्हारा रब तो उस की बन्दगी करो तो क्या तुम ध्यान नहीं करते उसी की त़रफ़ तुम सब को फिरना है **अल्लाह** का सच्चा वा'दा बेशक वोह पहली बार बनाता है फिर फ़ना के बा'द दोबारा बनाएगा कि उन को जो ईमान लाए और अच्छे काम किये इन्साफ़ का सिला दे और काफ़िरों के लिये पीने को खौलता पानी और दर्दनाक अ़ज़ाब बदला उन के कुफ़्र का। (سورۃ یونس ۱۰، رکوع ۱)

मुन्किरीन अगर कभी सन्जीदगी से भी क़ियामत के यक़ीनी होने पर **रसूलुल्लाह** की त़रफ़ मुख़ात़िब होते थे तब भी त़न्ज़िया अन्दाज़ ही में इस्तिफ़्सार करते थे कि

(وَ یَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ)[2]

और कहते हैं येह वा'दा कब आएगा अगर तुम सच्चे हो। (سورۃ الملک ۶۷، رکوع ۲)

(یَسْــٴَـلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَیَّانَ مُرْسٰىهَا ؕ)[3]

तुम से क़ियामत को पूछते हैं कि वोह कब को ठहरी है।

(سورۃ الاعراف ۷، رکوع ۲۳)

1...... پ۱۱، یونس: ۳-۴
2...... پ۲۹، الملک: ۲۵
3...... پ۹، الاعراف: ۱۸۷

(يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَیَّانَ مُرْسٰىهَا)[1]

तुम से क़ियामत को पूछते हैं कि वोह कब के लिये ठहरी हुई है। (2)(پ۳۰، النّٰزعٰت: ۴۲)

इन सुवालात का जवाब उन्हें बार बार दिया जाता रहा, चन्द जवाबात दर्जे ज़ैल हैं जो **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दिलवाए गए :

(قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّیْ ۚ لَا یُجَلِّیْهَا لِوَقْتِهَاۤ اِلَّا هُوَ ؔؕ ثَقُلَتْ فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ لَا تَاْتِیْكُمْ اِلَّا بَغْتَةً ؕ یَسْـَٔلُوْنَكَ كَاَنَّكَ حَفِیٌّ عَنْهَا ؕ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا یَعْلَمُوْنَ ﴿۱۸۷﴾)[3]

तुम फ़रमाओ इस (क़ियामत कब को ठहरी है) का इ़ल्म तो मेरे रब के पास है उसे वोही उस के वक़्त पर ज़ाहिर करेगा, भारी पड़ रही है आस्मानों और ज़मीन में, तुम पर न आएगी मगर अचानक, तुम से ऐसा पूछते हैं गोया तुम ने उसे ख़ूब तह़क़ीक़ कर रखा है तुम फ़रमाओ इस का इ़ल्म तो **अल्लाह** ही के पास है लेकिन बहुत लोग जानते नहीं। (سورۃ الاعراف ۷، رکوع ۲۳)

(فِیْمَ اَنْتَ مِنْ ذِكْرٰىهَا ﴿۴۳﴾ؕ اِلٰى رَبِّكَ مُنْتَهٰىهَا ﴿۴۴﴾ؕ اِنَّمَاۤ اَنْتَ مُنْذِرُ مَنْ یَّخْشٰىهَا)[4]

तुम्हें इस (क़ियामत कब को ठहरी है) के बयान से क्या तअ़ल्लुक़, तुम्हारे रब ही तक इस की इन्तिहा है, तुम तो फ़क़त़ उसे डराने वाले हो जो उस से डरे। (سورۃ النّٰزعٰت ۷۹، رکوع ۲)

1...... پ۳۰، النّٰزعٰت: ۴۲

2...... अस्ल में यहां सूरए अ़बस का ह़वाला दिया गया था जिसे किताबत की ग़-लत़ी पर मह़मूल करते हुए तस्ह़ीह़ कर दी गई।

3...... پ۹، الاعراف: ۱۸۷

4...... پ۳۰، النّٰزعٰت: ۴۳-۴۵

(क़ियामत का वक़्त छुपाए जाने की हिक्मत :)

इस वक़्त को मख़्फ़ी इस लिये रखा गया है कि आज़्माइश का मुद्दआ पूरा हो सके और जब येह साअ़ते मुन-त-ज़रा[1] आए तो हर शख़्स को जिस ने दुन्या में जैसी सई की है उस का उसे ठीक ठीक बदला दिया जा सके।

फ़ैसले की घड़ी को दूर समझ लेना इन्सान की सब से बड़ी भूल है क्यूं कि इन्सान की हर सांस आख़िरी सांस हो सकती है आख़िरत पर यक़ीन रखने और न रखने वालों का नफ़्सियाती तज्ज़िया ख़ुदा ने इस त़रह़ पेश किया है :

(وَمَا یُدْرِیْكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ قَرِیْبٌ ﴿۱۷﴾ یَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِیْنَ لَا یُؤْمِنُوْنَ بِهَاۚ وَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا مُشْفِقُوْنَ مِنْهَاۙ وَیَعْلَمُوْنَ اَنَّهَا الْحَقُّؕ اَلَاۤ اِنَّ الَّذِیْنَ یُمَارُوْنَ فِی السَّاعَةِ لَفِیْ ضَلٰلٍۭ بَعِیْدٍ ﴿۱۸﴾)[2]

और तुम क्या जानो शायद क़ियामत क़रीब ही हो, इस की जल्दी मचा रहे हैं वोह जो इस पर ईमान नहीं रखते और जिन्हें इस पर ईमान है वोह इस से डर रहे हैं और जानते हैं कि बेशक वोह ह़क़ है, सुनते हो बेशक जो क़ियामत में शक करते हैं ज़रूर दूर की गुमराही में हैं। (سورۃ الشوریٰ ۴۲، رکوع ۲)

(इब्तिदाई दौर की सूरतों में "अक़ीदए आख़िरत" पर ज़ोर देने की वज्ह :)

मक्की दौर में **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दा'वत में

1...... घड़ी जिस का इन्तिज़ार था।

2...... پ۲۵، الشوریٰ: ۱۷-۱۸

सब से ज़ियादा जिस चीज़ का मज़ाक़ मुन्किरीन ने उड़ाया वोह आख़िरत के वुजूब से था और वोह इस बात पर सिर्फ़ हैरानी और तअ़ज्जुब का ही इज़्हार नहीं करते थे बल्कि इसे बिल्कुल बईद अज़ अ़क़्लो इम्कान समझ कर इसे ना क़ाबिले यक़ीन ही नहीं बल्कि ना क़ाबिले तसव्वुर समझते थे मगर चूंकि आख़िरत के अ़क़ीदे को माने बिग़ैर इन्सान का त़र्ज़े फ़िक्र सन्जीदा नहीं हो सकता, ख़ैरो शर के मुआ़-मले में इस का मे'यारे अक़्दार[1] बदल नहीं सकता और वोह दुन्या परस्ती की राह छोड़ कर इस्लाम की राह पर नहीं चल सकता इस लिये मक्कए मुअ़ज़्ज़मा के इब्तिदाई दौर की सूरतों में ज़ियादा तर ज़ोर आख़िरत का अ़क़ीदा दिलों में बिठाने में सर्फ़ किया गया और इस अन्दाज़ में किया गया कि तौह़ीद का तसव्वुर भी ख़ुद बख़ुद ज़ेहन नशीन होता चला जाता है।

(इन्कारे आख़िरत के भयानक नताइज :)

इन्कारे आख़िरत वोह चीज़ है जो किसी शख़्स, गुरौह या क़ौम को मुजरिम बनाए बिग़ैर नहीं रहती, अख़्लाक़ की ख़राबी इस का लाज़िमी नतीजा है और तारीख़े इन्सानी शाहिद है कि ज़िन्दगी के इस न-ज़रिय्ये को जिस क़ौम ने इख़्तियार किया है वोह आख़िर कार तबाह हो कर रही, आख़िरत से इन्कार दर अस्ल ख़ुदा और उस की क़ुदरत और ह़िक्मत से इन्कार है और आख़िरत से इन्कार वोही लोग करते हैं जो ख़्वाहिशाते नफ़्स की बन्दगी करना चाहते हैं और अ़क़ीदए आख़िरत को अपनी इस आज़ादी में मानेअ़[2] समझते हैं जब वोह आख़िरत का इन्कार कर देते हैं तो उन की बन्दगिये नफ़्स और ज़ियादा बढ़ती चली

1...... जांचने का अन्दाज़।

2...... या'नी रुकावट

जाती है और वोह अपनी गुमराही में रोज़ ब रोज़ ज़ियादा ही भटक्ते चले जाते हैं, इर्शाद है :

(اِنَّ الَّذِیۡنَ لَا یُؤۡمِنُوۡنَ بِالۡاٰخِرَۃِ زَیَّنَّا لَہُمۡ اَعۡمَالَہُمۡ فَہُمۡ یَعۡمَہُوۡنَ ؕ﴿۴﴾ اُولٰٓئِکَ الَّذِیۡنَ لَہُمۡ سُوۡٓءُ الۡعَذَابِ وَ ہُمۡ فِی الۡاٰخِرَۃِ ہُمُ الۡاَخۡسَرُوۡنَ ﴿۵﴾)[1]

वोह जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते हम ने उन के कोतक[2] उन की निगाह में भले कर दिखाए हैं तो वोह भटक रहे हैं, येह वोह हैं जिन के लिये बड़ा अ़ज़ाब है और येही आख़िरत में सब से बढ़ कर नुक़्सान में। (سورۃ النمل ۲۷، رکوع ۱)

(کَذَّبُوۡا بِالسَّاعَۃِ ۟ وَ اَعۡتَدۡنَا لِمَنۡ کَذَّبَ بِالسَّاعَۃِ سَعِیۡرًا ﴿ۚ۱۱﴾)[3]

येह तो क़ियामत को झुटलाते हैं और जो क़ियामत को झुटलाए हम ने उस के लिये तय्यार कर रखी है भड़क्ती हुई आग। (سورۃ الفرقان ۲۵، رکوع ۱)

नमाज़ का पाबन्द होना या न होना भी क़ुरआन की रू से अ़लत्तरतीब[4] आख़िरत पर यक़ीन रखने या न रखने के मु-तरादिफ़ क़रार दिया गया है, फ़रमाया गया :

(وَ اسۡتَعِیۡنُوۡا بِالصَّبۡرِ وَ الصَّلٰوۃِ ؕ وَ اِنَّہَا لَکَبِیۡرَۃٌ اِلَّا عَلَی الۡخٰشِعِیۡنَ ﴿ۙ۴۵﴾ الَّذِیۡنَ یَظُنُّوۡنَ اَنَّہُمۡ مُّلٰقُوۡا رَبِّہِمۡ وَ اَنَّہُمۡ اِلَیۡہِ رٰجِعُوۡنَ ﴿۴۶﴾)[5]

और सब्र और नमाज़ से मदद चाहो और बेशक नमाज़ ज़रूर ज़रूर भारी है मगर उन पर जो दिल से मेरी त़रफ़ झुकते हैं जिन्हें यक़ीन है कि उन्हें अपने रब से मिलना है और उस की त़रफ़ फिरना। (سورۃ البقرۃ ۲، رکوع ۵)

1...... پ۱۹، النمل: ۴-۵
2...... बुरे काम
3...... پ۱۸، الفرقان: ۱۱
4...... सिल्सिला वार
5...... پ۱، البقرۃ: ۴۵-۴۶

(इन्फ़िरादी और इज्तिमाई रवय्यों की इस्लाह़ का ज़रीआ़ :)

इन्सान का इन्फ़िरादी रवय्या और इन्सानी गुरौहों का इज्तिमाई रवय्या कभी उस वक़्त तक दुरुस्त नहीं होता जब तक येह सुत़ूर[1] और येह यक़ीन इन्सानी सीरत की बुन्याद में पैवस्त न हो कि हम को ख़ुदा के सामने अपने आ'माल का जवाब देना है अगर अ़क़ीदए आख़िरत ह़क़ीक़तन नफ़्सुल अम्री[2] के मुत़ाबिक़ न होता और इस का इन्कार ह़क़ीक़त के ख़िलाफ़ न होता तो मुम्किन न था कि इस इक़रार के येह नताइज एक लुज़ूमी शान के साथ हमारे तजरिबे में आते, एक ही चीज़ से पैहम सह़ीह़ नताइज का बरआमद होना और उस के अ़दम के नताइज का नतीजा ग़लत़ हो जाना बस इस बात का क़त़ई सुबूत है कि वोह चीज़ बजाए ख़ुद सह़ीह़ है, आख़िरत को मानने से वोही लोग इन्कार करते हैं जिन के मु-तअ़ल्लिक़ फ़रमाया गया कि

(يُؤْفَكُ عَنْهُ مَنْ اُفِكَ ؕ۹)[3]

इस कुरआन से वोही औंधा किया जाता है जिस की क़िस्मत में ही औंधाया जाना हो । (سورۃ الذّٰریٰت ۵۱، رکوع ۱)

जब मुअमिनीन मैदाने ह़श्र से जन्नत की त़रफ़ ले जाए जा रहे होंगे और आख़िरत से इन्कार करने वाले जिन के मु-तअ़ल्लिक़ दोज़ख़ का फ़ैसला हो चुका होगा, अंधेरे में ठोकरें खा रहे होंगे तो रोशनी सिर्फ़ अहले ईमान के साथ होगी इस लिये कि

1...... लकीरें

2...... या'नी वाक़ेअ़

3...... پ۲۶، الذّٰریٰت: ۹

(يَوۡمَ لَا يُخۡزِى اللّٰهُ النَّبِىَّ وَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا مَعَهٗ ۚ نُوۡرُهُمۡ يَسۡعٰى بَيۡنَ اَيۡدِيۡهِمۡ وَبِاَيۡمَانِهِمۡ)[1] जिस दिन (रोज़े ह़श्र) **अल्लाह** रुस्वा न करेगा नबी और इन के साथ के ईमान वालों को, उन का नूर दौड़ता होगा उन के आगे और उन के दह्ने। (سورۃ التحریم ۶۶، رکوع ۲)

उस वक़्त अहले ईमान पर ह़क़ीक़त की कैफ़िय्यत त़ारी होगी और उस वक़्त भी उन्हें अपने क़ुसूरों और कोताहियों का एह़सास कर के येह अन्देशा लाह़िक़ होगा कि कहीं इन का नूर भी न छिन जाए इस लिये वोह दुआ़ करेंगे कि

(رَبَّنَاۤ اَتۡمِمۡ لَنَا نُوۡرَنَا وَاغۡفِرۡ لَنَا ۚ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ۝۸)[2] ऐ हमारे रब हमारे लिये हमारा नूर पूरा कर दे और हमें बख़्श दे बेशक तुझे हर चीज़ पर क़ुदरत है। (سورۃ التحریم ۶۶، رکوع ۲)

क़ियामत की घड़ी आ कर रहेगी इस लिये भी कि

(كُلُّ شَىۡءٍ هَالِكٌ اِلَّا وَجۡهَهٗ ؕ لَهُ الۡحُكۡمُ وَاِلَيۡهِ تُرۡجَعُوۡنَ ۝۸۸)[3] हर चीज़ फ़ानी है सिवा उस की ज़ात के उसी का हुक्म है और उसी की त़रफ़ फिर जाओगे। (سورۃ القصص ۲۸، رکوع ۹)

(هُوَ الۡاَوَّلُ وَالۡاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالۡبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَىۡءٍ عَلِيۡمٌ)[4] वोही अव्वल वोही आख़िर वोही ज़ाहिर वोही बात़िन और वोही सब कुछ जानता है। (سورۃ الحدید ۵۷، رکوع ۱)

1...... پ۲۸، التحریم: ۸
2...... پ۲۸، التحریم: ۸
3...... پ۲۰، القصص: ۸۸
4...... پ۲۷، الحدید: ۳

इलाही आयात की तरजुमानी इक़्बाल ने बाले जिब्रील की नज़्म "मस्जिदे क़ुरतुबा" के इस शे'र में की है कि

अव्वलो आख़िर फ़ना बातिनो ज़ाहिर फ़ना   नक़्शे कुहन हो कि नौ मन्ज़िले आख़िर फ़ना

अक़ीदए आख़िरत पर अक़्ली दलाइल

माद्दियत परस्ती के इस दौर में वाज़ेह तौर पर महसूस कर रहा हूं कि हमारे अफ़्कार व आ'माल पर अब मज़्हब की गिरिफ़्त दिन ब दिन ढीली पड़ती जा रही है और इस की वज्ह येह है कि आख़िरत की बाज़्पुर्स का ख़तरा अब एक तसव्वुरे मौहूम हो कर रह गया है हालां कि ग़ौर फ़रमाइये तो मज़्हब की बुन्याद ही अक़ीदए आख़िरत पर है।

अक़ीदए आख़िरत का मतलब येह है कि इस बात का यक़ीन दिल में रासिख़ हो जाए कि हम मरने के बा'द फिर दोबारा ज़िन्दा किये जाएंगे और ख़ुदा के सामने हमें अपनी ज़िन्दगी के सारे आ'माल का ह़िसाब देना होगा और अपने अ़मल के ए'तिबार से जज़ा व सज़ा दोनों त़रह के नताइज का हमें सामना करना पड़ेगा, इसी **यौमुल ह़िसाब** (या'नी ह़िसाब के दिन) का नाम मज़्हबे इस्लाम की ज़बान में क़ियामत है।

(अक़ीदए आख़िरत के मुह़र्रिकात[1] :)

अगर आख़िरत का येह ए'तिक़ाद दिलों से निकल जाए तो मज़्हब की पाबन्दी का सुवाल ही बे मा'ना हो कर रह जाए, आख़िर कोई आदमी क्यूं र-मज़ान के महीने में सारा दिन अपने आप को भूका प्यासा रखे, ठिठरती हुई सर्दी में क्यूं कोई अपने गर्म लिहाफ़ से निकल

1...... या'नी अक़ीदए आख़िरत पर उभारने वाली चीज़ें।

कर मस्जिद की त़रफ़ जाए, अपने ख़ून पसीने से कमाई हुई दौलत क्यूं कोई ज़कात के नाम पर ग़रीबों में लुटाए, ख़्वाहिशे नफ़्स और क़ुदरत व इख़्तियार के बा वुजूद क्यूं कोई ऐसी बहुत सारी चीज़ों से मुंह मोड़े जिसे मज़हब ने मम्नूअ़ क़रार दिया है ? येह सारी मशक़्क़तें और तक्लीफ़ें सिर्फ़ इसी लिये तो गवारा कर ली जाती हैं कि इन के पीछे या तो अ़ज़ाब का ख़त़रा लाह़िक़ है या फिर दाइमी आसाइशो राह़त का तसव्वुर मज़हब की हिदायात पर चलने की तरग़ीब देता है।

अ़क़ीदए आख़िरत के येह दो मुह़र्रिकात हैं जो दिल के इरादों पर हुकूमत करते हैं दूसरे लफ़्ज़ों में इसी अ़क़ीदे का नाम **"ईमान बिलग़ैब"** है या'नी अपनी आंख से देखे और अपने कान से सुने बिग़ैर इन ह़क़ाइक़ का अपने मुशा-हदे से भी बढ़ कर यक़ीन किया जाए जिन की ख़बर रसूले आ'ज़म صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़रीए हम तक पहुंची है।

आदमी अपनी सरिश्त[1] के ए'तिबार से चूंकि मुशा-हदात पर ज़ियादा भरोसा करता है इस लिये बहुत से लोगों की समझ में येह बात नहीं आती कि मरने के बा'द जब हम बिल्कुल सड़ गल जाएंगे और जब हमारा जिस्म मिट्टी का ग़ुबार बन कर हर त़रफ़ बिखर जाएगा तो इन ह़ालात में हम दोबारा क्यूंकर ज़िन्दा किये जा सकेंगे ? अ़क़ीदए आख़िरत के सुवाल पर इल्ह़ाद व तश्कीक[2] का दरवाज़ा बन्द करने के लिये हम शिद्दत से येह मह़सूस करते हैं कि इसे अ़क़्ली दलाइल से

1...... ख़स्लत

2...... या'नी अ़क़ीदए आख़िरत से इन्कार व इन्ह़िराफ़ और इस में शुकूको शुबहात।

इतना मुसल्लम[1] कर दिया जाए कि अ़क़्ले ग़लत़ अन्देश[2] भी सर झुका ले और येह इल्ज़ाम भी रफ़्अ़[3] हो जाए कि अन्धी तक़्लीद के इ़लावा अ़क़ीदए आख़िरत की कोई अ़क़्ली बुन्याद नहीं है।

पहली दलील

अपनी बात का आग़ाज़ हम मुशा–हदे से करते हैं कि इन्सानी मा'लूमात का सब से पहला ज़रीआ़ मुशा–हदा ही है, चौबीस हज़ार मील की गोलाई वाली येह ज़मीन, आस्मान की बुलन्दियों से गले मिलते हुए पहाड़ों की येह क़ित़ार और बे पायां वुस्अ़तों में फैला हुवा समुन्दरों का येह लहराता हुवा ख़ित़्त़ा येह सारी चीज़ें हम से सुवाल करती हैं कि हमें किस ने पैदा किया ?

ज़ाहिर है कि इस सुवाल का जवाब सिवा इस के और क्या हो सकता है कि इन सारी चीज़ों को ख़ुदाए وَحْدَهٗ لَاشَرِيْك ने पैदा किया फिर इस के बा'द दूसरा सुवाल उठेगा कि ज़मीन किस चीज़ से बनाई गई, पानी का माद्दए तख़्लीक़ क्या था और पहाड़ों का वुजूद किस चीज़ के ज़रीए अ़मल में आया ? अगर अपनी ह़माक़त से किसी चीज़ का नाम ले लिया गया तो फिर उस चीज़ के बारे में इसी त़रह़ का सुवाल उठेगा और सुवालात का येह सिल्सिला उठता ही रहेगा जब तक कि येह सच्ची बात कह न दी जाए कि ख़ुदा वन्दे क़दीर ने इन सारी चीज़ों को बिग़ैर किसी माद्दे के सिर्फ़ अपनी क़ुदरत से पैदा किया।

1...... साबित

2...... ग़लत़ सोच रखने वाली अ़क़्ल।

3...... दूर

(कुदरत से पैदा करने का मत़लब :)

कुदरत से पैदा करने का मत़लब येह है कि **अल्लाह** तआ़ला ने जिस चीज़ को पैदा करने का इरादा फ़रमाया उस के लिये लफ़्ज़ كُنْ (या'नी हो जा) फ़रमा दिया और वोह चीज़ ख़ुदा की मरज़ी के मुत़ाबिक़ वुजूद में आ गई, जैसा कि कुरआने ह़कीम में इर्शाद फ़रमाया गया है :

اِذَآ اَرَادَ شَيْــًٔا اَنْ يَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿۸۲﴾ (1)

या'नी **अल्लाह** तआ़ला जब किसी चीज़ को वुजूद में लाना चाहता है तो उसे कलिमा देता है कि तू हो जा तो वोह चीज़ फ़ौरन मौजूद हो जाती है।

सोचने की बात येह है कि जब इतनी बड़ी ज़मीन और इतना बड़ा आस्मान ख़ुदा वन्दे क़दीर ने बिग़ैर किसी माद्दे से मह़ज़ अपनी कुदरत से पैदा किया तो येह बात अ़क़्ल को भी तस्लीम करनी होगी कि उस ख़ुदाए ह़य्य व क़दीर के लिये सड़े गले मुर्दों को दोबारा ज़िन्दा कर देना क्या मुश्किल है।

कुरआने ह़कीम ने अ़क़ीदए आख़िरत के सिल्सिले में इस त़रह़ के शुब्हे का जवाब जितनी बलाग़त के साथ दिया है वोह अपनी मिसाल आप है। येह उस वक़्त की बात है जब एक गुस्ताख़ काफ़िर ने एक बोसीदा हड्डी हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने पेश करते हुए कहा था कि क्या सड़ी गली हड्डी दोबारा ज़िन्दा हो सकती है ? इस के जवाब में कुरआन की येह आयते करीमा नाज़िल हुई[2] :

1...... پ۲۳، یٰسٓ: ۸۲

2...... تفسیر خازن، یس، تحت الآیۃ: ۷۸، ۴/۱۳

وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَّنَسِیَ خَلْقَهٗ ؕ قَالَ مَنْ یُّحْیِ الْعِظَامَ وَهِیَ رَمِیْمٌ ﴿۷۸﴾ قُلْ یُحْیِیْهَا الَّذِیْۤ اَنْشَاَهَاۤ اَوَّلَ مَرَّةٍ ؕ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِیْمُ ﴿۷۹﴾ۙ (یٰسٓ) [1]

और उस ने हमारे ख़िलाफ़ एक मसल घड़ी और अपनी तख़्लीक़ का वाक़िआ़ भूल गया (दोबारा ज़िन्दा किये जाने के अ़क़ीदे पर ए'तिराज़ करते हुए) कहा कि बोसीदा हड्डियों को कौन ज़िन्दा करेगा ? आप जवाब में फ़रमा दीजिये कि वोही ज़िन्दा करेगा जिस ने पहली बार इसे वुजूद बख़्शा था और वोह अपनी हर मख़्लूक़ को जानने वाला है ।

इन्सानी दुन्या का येह दस्तूर सामने रखिये तो जवाब की बलाग़त अच्छी त़रह़ समझ में आ जाएगी कि काम पहली बार मुश्किल होता है दूसरी बार तो बिल्कुल आसान हो जाता है लेकिन जो काम ख़ुदा के लिये पहली बार भी मुश्किल नहीं था वोह दूसरी बार क्यूंकर मुश्किल हो जाएगा !?

दूसरी दलील

इस आ़लमे हस्ती में इन्सान की आमद पर आप ग़ौर करेंगे तो आप पर येह राज़ खुलेगा कि इन्सान अचानक यहां नहीं आ गया बल्कि इस आ़लम में क़दम रखने से पहले कई आ़लम से वोह गुज़र चुका था, पहला आ़लम "आ़लमे अरवाह़" है जहां इस की रूह़ मौजूद थी और इस का सुबूत येह है कि इस्तिक़रारे ह़म्ल[2] के कुछ अ़र्से बा'द

1...... پ۲۳،یٰسٓ:۷۸-۷۹

2...... या'नी ह़म्ल ठहरने ।

जब बच्चे के जिस्म में रूह़ दाख़िल होती है और वोह मां के पेट में ह़-र-कत करने लगता है तो अब सुवाल येह पैदा होता है कि बच्चे के जिस्म में दाख़िल होने से पहले वोह रूह़ कहां थी या कहां से आई ? वोह जहां भी मौजूद हो या जहां से भी आई हो उसी आ़लम का नाम "आ़लमे अरवाह़" है।

अब आ़लमे अरवाह़ के बा'द दूसरा आ़लम है "शि-कमे मादर"(1) जिसे आ़लमे अरह़ाम भी कहा जाता है, इस आ़लम में भी इन्सान को कमो बेश नव महीने रहना पड़ता है, एक मिनट रुक कर ज़रा क़ुदरत का येह ह़ैरत अंगेज़ इन्तिज़ाम देखिये कि एक चलती फिरती क़ब्र में नव महीने तक एक बच्चा ज़िन्दा रहता है, इस के मा'ना येह हैं कि इन्सानी ज़िन्दगी के लिये जितने अस्बाब की ज़रूरत है वोह सारे अस्बाब बच्चे को वहां फ़राहम किये जाते हैं।

शि-कमे मादर से बाहर आ जाने के बा'द अगर सारी दुन्या के अति़ब्बा व ह़ु-कमा चाहें कि पेट चाक कर के फिर बच्चे को दोबारा उस जगह मुन्तक़िल कर दें तो यक़ीन है कि एक मिनट भी वहां ज़िन्दा नहीं रह सकेगा, यहीं से ख़ुदा और बन्दों के इन्तिज़ाम का फ़र्क़ समझ में आ जाता है कि जो चीज़ बन्दों के लिये ना मुम्किन है वोह ख़ुदा की क़ुदरत के सामने मुम्किन ही नहीं बल्कि वाक़ेअ़ है और येह बात भी वाज़ेह़ हो जाती है कि हर आ़लम का माह़ोल और तक़ाज़ा अलग अलग है, एक का क़ियास दूसरे पर नहीं किया जा सकता।

1...... या'नी मां का पेट।

इतनी तफ़्सील के बा'द कहना येह है कि आ़लमे दुन्या में आने से पहले अगर इन्सान को मर्ह़ला वार दो आ़लम से गुज़रना पड़ता है तो आ़लमे दुन्या के बा'द भी अगर कोई चौथा आ़लम मान लिया जाए तो इस में क्या अ़क़्ली क़बाह़त है ? इसी चौथे आ़लम का नाम हम आ़लमे आख़िरत रखते हैं, अगर इसी नाम से इख़्तिलाफ़ है तो कोई और नाम रख लिया जाए लेकिन एक चौथा आ़लम तो बहर ह़ाल मानना ही पड़ेगा, क्यूं कि मरने के बा'द जब रूह़ जिस्म से निकल जाती है तो वोही सुवाल यहां भी उठेगा कि निकल कर वोह कहां गई ? वोह जहां भी गई हो उसी का नाम आ़लमे आख़िरत है।

सारी बह़्स का ख़ुलासा येह है कि हमारे वुजूद को मर्ह़ला वार चार आ़लमों से गुज़रना पड़ता है, दो आ़लम से तो हम गुज़र चुके हैं, येह दुन्या तीसरा आ़लम है जिस से हम गुज़र रहे हैं और चौथे आ़लम में मरने के बा'द क़दम रखेंगे।

तीसरी दलील

जिस त़रह़ ज़मीन व आस्मान का वुजूद किसी बालातर हस्ती की मशिय्यत का नतीजा है इसी त़रह़ इन्सान की तख़्लीक़ भी उसी क़ुदरत से होती है और वोही इस कारख़ानए हस्ती को अपनी मरज़ी के मुत़ाबिक़ चला रहा है वोही आस्मान से पानी बरसाता है वोही ज़मीन से दाने उगाता है और वोही इन्सानी ज़िन्दगी के लिये सारे अस्बाब फ़राहम करता है।

उसी ने इन्सान को अशरफ़ुल मख़्लूक़ात बनाया और अ़क़्लो फ़ह्म की ने'मत से आरास्ता कर के ख़ैरो शर और सह़ीह़ व ग़लत़ में इम्तियाज़ करने की क़ुव्वत अ़त़ा फ़रमाई।

इस काएनात में इन्सान का मक़ाम जितना बुलन्द है उसी ए'तिबार से इस पर ज़िम्मेदारियां भी आ़इद की गई हैं, बहुत से फ़राइज़ का इसे पाबन्द किया गया है और बहुत सी चीज़ों से इसे रोक दिया गया है। फ़राइज़ की पाबन्दी करने वालों को इन्आ़म व जज़ा की बिशारत दी गई है और मम्नूआ़त का इरतिकाब करने वालों को सज़ा का ख़ौफ़ दिलाया गया। जिस ख़ुदा ने इन्सानों को पैदा किया, इन्हें पाला और जगह जगह बे शुमार ने'मतों के दस्तर ख़्वान इन के लिये बिछाए और बे पायां रह़मतो करम के साथ क़दम क़दम पर इन की नाज़ बरदारी की उसे क़त़्अ़न ह़क़ पहुंचता है कि ना फ़रमानों को वोह सज़ा दे और इत़ाअ़त शिआ़रों को ख़िल्अ़ते इक्राम से निहाल करे।

इन ह़ालात में अ़क़्ल का तक़ाज़ा भी येही है कि ज़िन्दगी भर के आ'माल का मुह़ा-सबा करने के लिये ह़िसाबो किताब का एक दिन मुक़र्रर किया जाए ताकि इत़ाअ़त शिआ़रों को इन्आ़मो इक्राम से नवाज़ा जाए और ना फ़रमानों को सज़ा दी जाए, अगर फ़ैसले का कोई दिन मुक़र्रर न हो तो जज़ा व सज़ा का क़ानून बे मा'ना हो कर रह जाए।

अब यहां येह बताने की ज़रूरत नहीं है कि फ़ैसले का जो दिन मुक़र्रर किया गया है उस का नाम क़ियामत का दिन है, और वोह आ़लमे आख़िरत में पेश आएगा।

चौथी दलील

अ़क़ीदए आख़िरत के मुन्किरीन के पास सब से मज़्बूत़ दलील येह है कि आ़लमे दुन्या के इ़लावा भी अगर कोई और आ़लम है तो वोह हमारी आंखों से नज़र क्यूं नहीं आता और उस आ़लम की आवाज़ हमारे कानों तक क्यूं नहीं पहुंचती ?

इस मक़ाम पर ज़रा जह्ल की फ़ित़रत की हम-आहंगी देखिये कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम के गुमराह लोगों ने भी येही कहा था :

لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى نَرَى اللّٰهَ جَهْرَةً(1) हम आप पर हरगिज़ ईमान नहीं लाएंगे जब तक हम ख़ुदा को खुल्लम खुल्ला अपनी आंखों से न देख लेंगे।

लेकिन येह नादान इस बात को नहीं समझते कि किसी चीज़ का आंखों से मुशा-हदा न होना उस चीज़ के न होने की दलील नहीं है और किसी आवाज़ को अपने कानों न सुन सकना इस बात की दलील नहीं बन सकता कि आवाज़ का वुजूद ही नहीं है।

आज के मशीनी दौर में इस की बहुत सी ज़िन्दा मिसालें हमारे सामने मौजूद हैं, मिसाल के त़ौर पर किसी भी रेडियो स्टेशन से जो आवाज़ नश्र की जाती है वोह रेडियाई लहरों के ज़रीए़ फ़ज़ा में हर त़रफ़ फैल जाती है उस की लहरें हमारे कानों के क़रीब से गुज़रती रहती हैं लेकिन आवाज़ सुनाई नहीं देती लेकिन जैसे ही हम रेडियो ऑन करते हैं फ़ज़ा में तैरने वाली आवाज़ हमारे कानों से टकराने लगती है।

1...... پ۱، البقرة: ۵۵

बिल्कुल इसी त्ऱह् टेलीवीज़न सेन्टर से रोशनी की लहरों के दोश पर जो तस्वीरें टेलीकास्ट की जाती हैं वोह हमारी आंखों के सामने से गुज़रती रहती हैं लेकिन हमें फ़ज़ा में कोई मन्ज़र दिखाई नहीं देता और जैसे ही हम टेलीवीज़न बक्स का बटन दबाते हैं स्क्रीन पर सारी तस्वीरें हमें नज़र आने लगती हैं इसी त्ऱह् किसी के फेफड़े का सियाह धब्बा हमें बाहर से नज़र नहीं आता लेकिन एक्सरे मशीन न सिर्फ़ येह कि उस धब्बे को देख लेती है बल्कि दूसरों को भी दिखा देती है।

इन सारी मिसालों से येह ह्क़ीक़त अच्छी त्ऱह् वाज़ेह् हो जाती है कि मौजूद होने के बा वुजूद बहुत सी चीज़ों के देखने और सुनने से हम सिर्फ़ इस लिये क़ासिर रहते हैं कि हमारे पास उस के मुशा–हदे के लिये ज़राएअ़ नहीं हैं, न आंखों में उस के लिये कुव्वते बसारत है और न कानों में उस के लिये कुव्वते समाअ़त है, इस लिये अस्ल सुवाल मुशा–हदे के फ़ुक़्दान का नहीं बल्कि ज़राएअ़ के फ़ुक़्दान का है।

और ऐसा इस लिये है कि जिस ने हमें आंखें अ़त़ा की हैं, हमें कान मर्ह्मत फ़रमाए हैं उस ने बसारत व समाअ़त की कुव्वतों के लिये ह्दें भी मुक़र्रर कर दी हैं हम अपनी आंखों से मिस्री की डली तो देख लेते हैं लेकिन उस की मिठास नहीं देख सकते इसी त्ऱह् आंखें सिर्फ़ माद्दी चीज़ों को देख सकती हैं मिस्री की मिठास और संखिया का ज़ह्र चूंकि एक मा'नवी ह्क़ीक़त है इस लिये आंखों में उस के देखने की सलाहिय्यत नहीं दी गई है।

फिर सोचने की बात येह है कि जब इस आ़लम की मा'नवी

ह़क़ीक़त को देखने की कु़व्वत हमारी आंखों में नहीं है तो वोह आ़लमे आख़िरत जिस का तअ़ल्लुक़ आ़लमे ग़ैब से है उसे हमारी आंखें क्यूंकर देख सकती हैं ? अलबत्ता ख़ुदा ने अपने जिन मुक़र्रब बन्दों को ग़ैबी क़ुव्वते इदराक से सरफ़राज़ किया है वोह इसी दुन्या में ग़ैबी ह़क़ीक़तों का मुशा-हदा कर लेते हैं। ह़दीसों में इस त़रह़ की रिवायतें कसरत से मिलती हैं कि हु़ज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इसी ज़मीन पर खड़े हो कर जन्नत व दोज़ख़ का मुशा-हदा फ़रमाया है, जहां तक बयान किया गया है हु़ज़ूर ने चाहा कि हाथ बढ़ा कर जन्नत के अंगूर का एक ख़ोशा तोड़ लें लेकिन फिर ख़याल कुछ आया और हाथ खींच लिया।[1]

ह़ज़रत जिब्रईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام के बारे में तो सभी जानते हैं कि वोही ख़ुदाए ज़ुल जलाल की वह्य ले कर हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास आया करते थे। हु़ज़ूर बे तकल्लुफ़ उन्हें देखते थे और बराहे रास्त उन की आवाज़ सुनते थे ह़ालां कि ह़ज़रत जिब्रईले अमीन आ़लमे दुन्या की नहीं आ़लमे ग़ैब की हस्ती हैं।

येह रिवायत भी ह़दीसों में मौजूद है कि क़ब्रिस्तानों से गुज़रते हुए हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस अम्र का भी मुशा-हदा फ़रमा लेते थे कि आ़लमे बरज़ख़ में किसी मुर्दे का क्या ह़ाल है[2] ह़ालां कि मरने के बा'द अ़ज़ाब व सवाब का सारा मुआ़-मला आ़लमे ग़ैब से

1...... بخاری، کتاب الاذان، باب رفع البصر الی الامام فی الصلاۃ، ۱/۲۶۵، الحدیث: ۷۴۸

2...... بخاری، کتاب الوضوء، ۵۹-باب، ۱/۹۶، الحدیث: ۲۱۸

तअ़ल्लुक़ रखता है। इन सारी बह़सों से येह बात अच्छी त़रह़ साबित हो गई कि आ़लमे आख़िरत के ह़क़ाइक़ अपनी जगह पर मौजूद हैं, कमी जो कुछ है वोह हमारे अन्दर है कि उन के मुशा-हदे के लिये रूह़ में जिस लत़ाफ़त की ज़रूरत है वोह हर इन्सान को मुयस्सर नहीं है।

पांचवीं दलील

तारीख़े आ़लम का मुत़ा-लआ़ करें तो आप पर येह ह़क़ीक़त खुल जाएगी कि आ़लमे आख़िरत का तसव्वुर इन्सान की फ़ित़रत में इस त़रह़ वदीअ़त कर दिया[1] गया है कि अ़हदे क़दीम[2] से दुन्या की सारी अक़्वाम किसी न किसी शक्ल में मरने के बा'द जज़ा व सज़ा के अ़क़ीदे से मुन्सलिक रही हैं और इस का सुबूत येह है कि मरने के बा'द सब के पास मुर्दे की नजात व मग़्फ़िरत के लिये कुछ न कुछ मज़्हबी रुसूम ज़रूर अदा किये जाते हैं, इस के लिये चाहे त़रीक़े मुख़्तलिफ़ हों लेकिन तसव्वुर तो मुश्तरक है।

आप मुख़्तलिफ़ ज़बानों की लुग़ात का तफ़्सीली जाएज़ा लें तो जन्नत के दोज़ख़ के हम-मा'ना अल्फ़ाज़ आप को हर ज़बान में मिल जाएंगे और येह उसूल अहले ज़बान के दरमियान मुसल्लम[3] है कि

1...... या'नी रख दिया।

2...... ज़मानए माज़ी।

3...... माना हुवा

हर ज़बान में इसी मफ़्हूम के लिये अल्फ़ाज़ वज़्अ़ किये जाते जो अहले ज़बान के तसव्वुर में पहले से मौजूद होता है, बह़्स के इस रुख़ से भी येह बात वाज़ेह़ हो जाती है कि आ़लमे आख़िरत का तसव्वुर सिर्फ़ अहले इस्लाम ही के अ़क़ीदे में नहीं है बल्कि दुन्या के सारे इन्सानों की फ़ित़रत इसी अ़क़ीदे से हम-आहंग[1] है।

चन्द मख़्सूस त़बक़ात और चन्द मख़्सूस अ़ह्द के लोगों के बारे में कहा जा सकता है कि वोह फ़िक्रो ए'तिक़ाद की ग़-लत़ियों में मुब्तला हो गए लेकिन नस्ले इन्सानी के यौमे आग़ाज़ से ले कर आज तक बिला तफ़्रीक़ सारी दुन्या के इन्सानों पर येह इल्ज़ाम हरगिज़ आ़इद नहीं किया जा सकता कि आख़िरत के तसव्वुर को अपने मज़्हबी अ़क़ाइद की फ़ेहरिस्त में शामिल कर के वोह फ़रेबे मुसल्सल का शिकार रहे, ख़ास त़ौर पर इन ह़ालात में जब कि अ़क़ीदए आख़िरत की ता'लीम देने वालों में वोह अम्बियाओ मुर-सलीन (عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) भी हैं जिन की शख़्सिय्यतें न सिर्फ़ अहले इस्लाम में बल्कि अक़्वामे आ़लम में भी मुसल्लमुस्सुबूत[2] और इ़ज़्ज़तो शरफ़ की ह़ामिल हैं और वोह लोग भी हैं जो अपने अपने ह़ल्क़े में मज़्हबी और रूह़ानी पेश्वा की ह़ैसिय्यत से जाने और माने जाते हैं, इस लिये कहने दिया जाए कि अगर तारीख़ के हर दौर के सारे इन्सानों को हम झूटा क़रार दे दें तो फिर इस दुन्या में कौन सच्चा रह जाएगा ?

1...... मुत्तफ़िक़

2...... या'नी ऐसी तस्लीम शुदा हैं कि सुबूत की ज़रूरत नहीं।

अपने मज़्मून के आख़िरी मर्ह़ले से गुज़रते हुए येह फ़िक़्रा ज़रूर चुस्त[1] करूंगा कि **अ़क़ीदए आख़िरत की तक्ज़ीब करने वाला सिर्फ़ किसी एक त़बक़े की तक्ज़ीब नहीं करता बल्कि इब्तिदा से ले कर आज तक हर अ़ह्द के सारे इन्सानों को वोह झूटा साबित करना चाहता है।** मैं यक़ीन करता हूं कि दुन्या का कोई भी होशमन्द इन्सान इस जारिह़ाना अन्दाज़े फ़िक्र से हरगिज़ इत्तिफ़ाक़ नहीं करेगा।

अ़क़ीदए आख़िरत

क़ियामत व बि'सत व ह़श्र व ह़िसाब व सवाब व अ़ज़ाब व जन्नत व दोज़ख़ सब के वोही मा'ना हैं जो मुसल्मानों में मश्हूर हैं, जो शख़्स इन चीज़ों को तो ह़क़ कहे मगर इन के नए मा'ना घड़े (म-सलन सवाब के मा'ना अपने ह़-सनात को देख कर ख़ुश होना और अ़ज़ाब अपने बुरे आ'माल को देख कर ग़मगीन होना या ह़श्र फ़क़त़ रूहों का होना) वोह ह़क़ीक़तन इन चीज़ों का मुन्किर है और ऐसा शख़्स काफ़िर है। (बहारे शरीअ़त, 1/151)

1...... या'नी चस्पां।